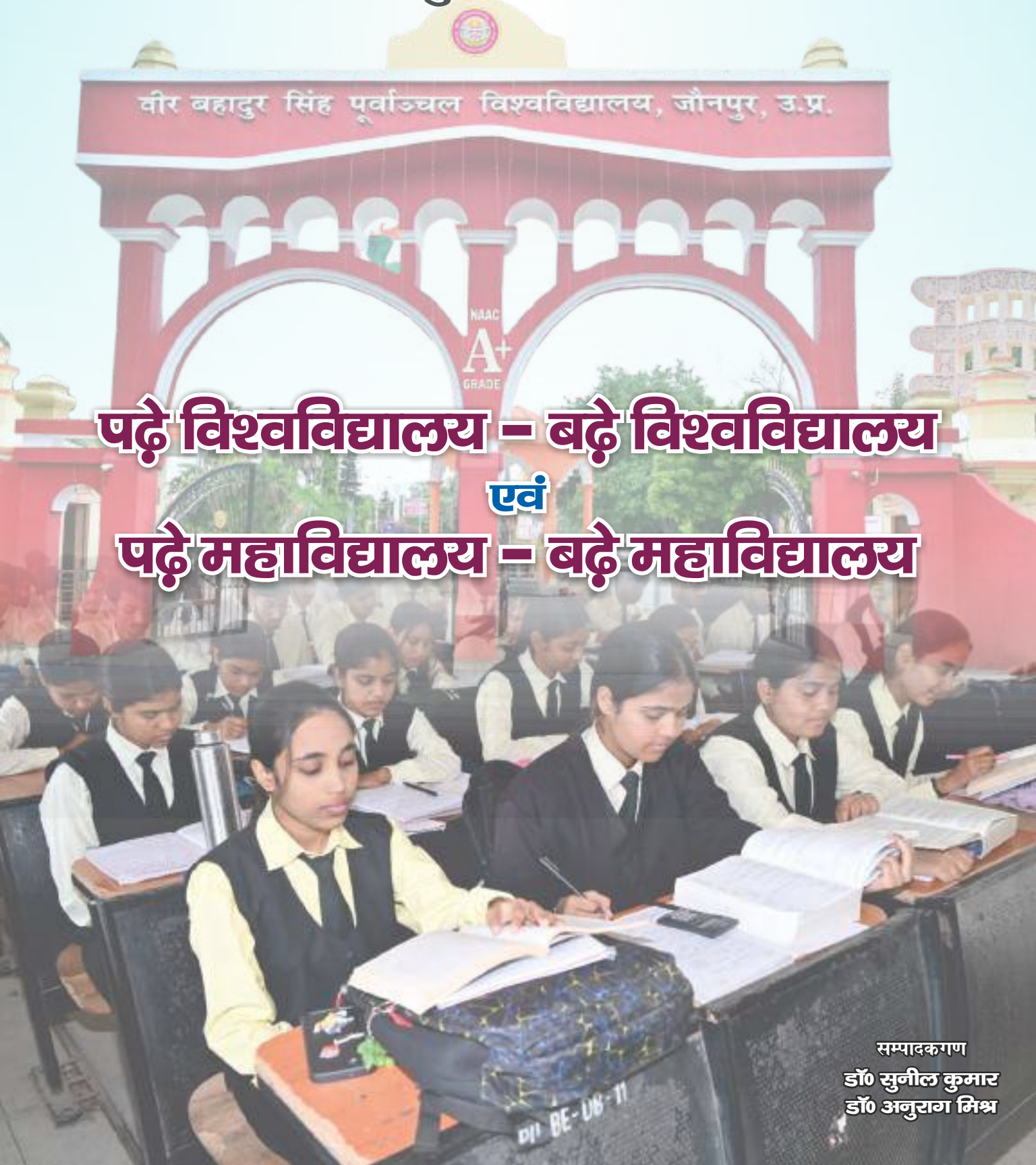
वीर बहादुर सिंह पूर्वाञ्चल विश्वविद्यालय

जौनपुर, उत्तर प्रदेश



पढ़े विश्वविद्यालय – बढ़े विश्वविद्यालय

एवं

पढ़े महाविद्यालय – बढ़े महाविद्यालय

सम्पादकगण
डॉ0 सुनील कुमार
डॉ0 अनुराग मिश्र



श्रीमती आनंदीबेन पटेल

माननीय कुलाधिपति एवं श्री राज्यपाल, उत्तर प्रदेश

पढ़े विश्वविद्यालय – बढ़े विश्वविद्यालय
एवं
पढ़े महाविद्यालय – बढ़े महाविद्यालय

प्रकाशक :

वीर बहादुर सिंह पूर्वाञ्चल विश्वविद्यालय

जौनपुर - 222003 (उ०प्र०)

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विवरण
01	कुलपति का सन्देश
02	राजभवन से निर्देशित कार्यक्रम–
03	राज्यपाल सचिवालय का ई–मेल पत्र
04	विश्वविद्यालय द्वारा निर्गत कार्यालय–आदेश
05	''पढ़े विश्वविद्यालय / बढ़े विश्वविद्यालय'' एवं ''पढ़े महाविद्यालय / बढ़े महाविद्यालय'' का उद्देश्य
06	विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय परिसरों में आयोजित कार्यक्रम के फोटोग्राफ्स
07	विभिन्न दैनिक समाचार पत्रों में प्रकाशित समाचार–
08	सोशल मीडिया पर पोस्ट कार्यक्रम के लिंक–
09	राजभवन को प्रेषित कार्यक्रम की रिपोर्ट–

कुलपति का संदेश



''पढ़े विश्वविद्यालय/बढ़े विश्वविद्यालय एवं पढ़े महाविद्यालय/बढ़े महाविद्यालय'' केवल एक नारा नहीं, बल्कि एक व्यापक दृष्टिकोण है जो शिक्षा के वास्तविक उद्देश्य को परिभाषित करता है। यह विचारधारा छात्रों को केवल पाठ्य पुस्तकों तक सीमित नहीं रखती, बल्कि उन्हें समग्र रूप से विकसित होने की प्रेरणा देती है। वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय की कुलपति के रूप में मैं यह विश्वास के साथ कह सकती हूँ कि शिक्षा का मूल उद्देश्य ज्ञान का अर्जन ही नहीं, बल्कि उस ज्ञान का सही दिशा में प्रयोग है।

हमारा विश्वविद्यालय सदैव इस बात का पक्षधर रहा है कि शिक्षा केवल एक औपचारिक प्रक्रिया न होकर, जीवन जीने की कला सिखाने का माध्यम बने। पढ़े विश्वविद्यालय का तात्पर्य है विश्वविद्यालय में केवल अकादमिक ज्ञान अर्जित करना नहीं, बल्कि जीवन मूल्य, सामाजिक उत्तरदायित्व और आत्मविकास की दिशा में भी स्वयं को समर्पित करना। यहाँ का वातावरण, शिक्षकों का मार्गदर्शन और विविध गतिविधियाँ छात्रों को बहुआयामी विकास के अवसर प्रदान करती हैं।

बढ़े विश्वविद्यालय का आशय है विद्यार्थी और संस्था दोनों ही निरंतर प्रगति करें। विश्वविद्यालय का विकास छात्रों की प्रतिभा, शोध और नवाचार के माध्यम से होता है। जब छात्र अपनी सीमाओं को लांघकर नव क्षितिज की ओर बढ़ते हैं, तो विश्वविद्यालय भी नये कीर्तिमान स्थापित करता है। इसी विचारधारा को आधार बनाकर हमने अपने पाठ्यक्रमों को अधिक व्यावहारिक बनाया है, अनुसंधान को बढ़ावा दिया है और तकनीकी संसाधनों में नवाचार को अपनाया है।

हमारा लक्ष्य एक ऐसा शैक्षणिक वातावरण निर्मित करना है जहाँ हर छात्र को अपने सपनों को साकार करने के लिए उचित संसाधन, प्रेरणा और समर्थन मिल सके। हम चाहते हैं कि हमारा विश्वविद्यालय न केवल डिग्री प्रदान करने वाला संस्थान बने, बल्कि चरित्र निर्माण और राष्ट्र निर्माण का भी एक सशक्त माध्यम हो।

आज के प्रतिस्पर्धी और तकनीकी युग में केवल किताबी ज्ञान पर्याप्त नहीं है। हमें विद्यार्थियों को इस प्रकार तैयार करना है कि वे न केवल अपने क्षेत्र में दक्ष हों, बल्कि समाज में एक जिम्मेदार नागरिक की भूमिका भी निभा सकें। इसलिए हम शिक्षण के साथ–साथ नेतृत्व, संवाद, नवाचार और उद्यमिता को भी बढ़ावा दे रहे हैं। विश्वविद्यालय में लगातार योग प्रशिक्षण एवं अभ्यास कार्यक्रम चलाया जा रहा है। आनलाइन प्लेडज फार योगा कार्यक्रम में 12–18 जून 2024 के मध्य विश्वविद्यालय द्वारा सक्रिय सहभागिता करने पर पूरे प्रदेश में आठवां स्थान प्राप्त करने पर माननीय कुलाधिपति जी द्वारा प्रशस्ति–पत्र देकर सम्मानित किया गया। प्रगति के क्षेत्र में विश्वविद्यालय के बढ़ते कदम के चलते प्रधानमंत्री उच्चतर शिक्षा अभियान (पीएम–ऊषा) योजना के तहत 20 करोड़ रुपये का अनुदान प्राप्त हुआ है। शोध गंगा पोर्टल पर अब तक 9287 थीसिस अपलोड कर विश्वविद्यालय राज्य विश्वविद्यालय में दूसरे स्थान और देश में 11वें स्थान पर है। विश्वविद्यालय सुविधा प्रदान करने के लिए अन्य विश्वविद्यालय और संस्थानों से समझौता ज्ञापन (एमओयू) कराने के साथ हमारे विश्वविद्यालय ने हर क्षेत्र में कई महत्वपूर्ण कार्य किए है।

अंत में मैं यही कहना चाहूंगी कि वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय शिक्षा की उस परंपरा का निर्वहन कर रहा है जहाँ पढ़ना केवल ज्ञान के लिए नहीं, बल्कि बढ़ने के लिए होता है। आइए, हम सब मिलकर इस अभियान को गति दें– पढ़ो, बढ़ो और

प्रो० वन्दना सिंह

कुलपति, वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय

आभार

पढ़े विश्वविद्यालय, बढ़े विश्वविद्यालय कार्यक्रम की सफलता का यह गौरवपूर्ण क्षण हम सभी के लिए गर्व का विषय है। यह कार्यक्रम न केवल ज्ञान के विस्तार की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण प्रयास रहा, अपितु विश्वविद्यालय की आत्मा में नई चेतना का संचार भी हुआ। इस नवप्रयास की सफलता में जिन–जिन सहयोगियों का हाथ रहा है, उन सभी के प्रति हम हृदय की गहराइयों से आभार प्रकट करते हैं। "शब्दों से नहीं, भावों से जुड़ता है आभार का सेतु"।

सबसे पहले हम विश्वविद्यालय के कुलपति महोदय का विशेष रूप से आभार व्यक्त करते हैं, जिनके नेतृत्व की छाया में यह कार्यक्रम पुष्पित–पल्लवित हुआ। उनकी दूरदर्शिता, संवेदनशीलता एवं प्रबुद्ध मार्गदर्शन इस पहल की आत्मा रही। उनके शब्दों की प्रेरणा ने पूरे परिसर को एक विचारधारा में पिरोया ''शिक्षा केवल किताबी ज्ञान नहीं, बल्कि जीवंत विचारों की फसल है।''

शब्दों की सुई से भावों की माला पिरोने वाले हमारे प्राध्यापकों, शोधार्थियों एवं शिक्षकों का आभार व्यक्त करना एक नैतिक कर्तव्य है। इन सबने अपनी रचनात्मकता, संकल्प और प्रतिबद्धता से कार्यक्रम में न केवल सहभागिता निभाई, बल्कि छात्रों के मन में भी सीखने की लौ जगाई।

"पढ़े विश्वविद्यालय/बढ़े विश्वविद्यालय एवं पढ़े महाविद्यालय/बढ़े महाविद्यालय" हेतु राजभवन द्वारा दिए गए निर्देश के क्रम में विश्वविद्यालय एवं सम्बद्ध महाविद्यालयों के शिक्षक, कर्मचारी एवं छात्र/छात्राओं एवं आधिकारियों ने एक ही समय (दिनांक : 07 मार्च 2025, 11 बजे से 12 बजे तक) पर एक साथ पुस्तकें पढ़ी। किताबें हमारे जीवन की सबसे अच्छी साथी होती हैं। जब भी हमें उनकी आवश्यकता होती है वे हमारे लिए उपलब्ध होती हैं। किताबें हमारी आसपास की दुनिया को समझने, सही और गलत के बीच निर्णय लेने में हमारी मदद करती हैं। वे हमारे आदर्श, मार्गदर्शक या सर्वकालिक शिक्षक के रूप में भी हमारे जीवन में शामिल होती हैं। किताबें पढ़ने से हमारे व्यक्तित्व में गुणात्मक परिवर्तन आता है। इसी महत्व को पहचानते हुए माननीय कुलाधिपति जी ने उत्तर प्रदेश के सभी राज्य विश्वविद्यालयों को निर्देशित किया कि वह अपने विश्वविद्यालय में पढ़े विश्वविद्यालय/बढ़े विश्वविद्यालय एवं पढ़े महाविद्यालय/बढ़े महाविद्यालय का कार्यक्रम आयोजित करें।

हम सर्वप्रथम माननीय कुलाधिपति जी के प्रति आभार प्रकट करना चाहते हैं, जिनके निर्देशन एवं कुशल मार्गदर्शन में विश्वविद्यालय परिसर एवं महाविद्यालयों में तथा गोद लिए गांवों में कुल मिलाकर 27052 लोगों ने एक साथ पुस्तकें पढ़ीं।

आभार की इस कड़ी में हम मा0 कुलपति जी के प्रति आभार व्यक्त करना चाहते हैं जिन्होंने हम पर विश्वास जताते हुए नोडल अधिकारी नामित किया। माननीय कुलपति जी के कुशल मार्गदर्शन का ही प्रतिफल है कि इतनी बड़ी संख्या में लोगों ने पूरे उत्साह के साथ इस कार्यक्रम को सफल बनाया ।

विश्वविद्यालय के कुलसचिव श्री महेंद्र कुमार के प्रति हम विशेष आभार प्रकट करना चाहते हैं जिनके उत्साहपूर्ण सहयोग के बगैर कार्यक्रम सफल ही नहीं हो सकता था। आभार के अगली कड़ी में परीक्षा नियंत्रक डॉ० विनोद कुमार सिंह, डॉ० जाह्नवी श्रीवास्तव, डॉ० शशिकांत यादव, डॉ० राकेश कुमार यादव, चीफ वार्डेन प्रो० सौरभ पाल, डॉ० दिग्विजय सिंह राठौर एवं समस्त सम्मानित आचार्यगण एवं प्रशासनिक अधिकारी जिन्होंने पर्यवेक्षक की भूमिका में रह कर महाविद्यालय में जा कर कार्यक्रम को सफल कराया, समस्त प्रशासनिक कर्मचारी एवं महाविद्यालयों के प्रबंधक तथा प्राचार्य जिनके सहयोग ने कार्यक्रम को सफल करते हुए माननीय कुलाधिपति जी की मंशा के अनुरूप किताबों के प्रति समाज में जागरूकता फैलायी।

धन्यवाद !

प्रो० राकेश कुमार यादव
नोडल अधिकारी
गोद लिए गये गाँव

डॉ० राजबहादुर यादव
नोडल अधिकारी
महाविद्यालय

डॉ० अनुराग मिश्र
नोडल अधिकारी
विश्वविद्यालय परिसर

राजभवन से निर्देशित कार्यक्रम

अपर मुख्य सचिव श्री राज्यपाल की अध्यक्षता में दिनांक 13 फरवरी 2025 को प्रज्ञा कक्ष, राजभवन में हुई ऑनलाइन बैठक के कार्यवृत्त के बिंदु संख्या 10 में दिए गए निर्देश तथा माननीय कुलाधिपति के अपर मुख्य सचिव के पत्र संख्या 1312 / 32–जी०एस० / 2025 व1314 / 32– जी०एस० / 2025 दिनांकरू 28 फरवरी 2025 में दिए गए निर्देश के क्रम में वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर के परिसर तथा संबद्ध महाविद्यालयों में दिनांक–7 मार्च 2025 को पढ़े विश्वविद्यालय – बढ़े विश्वविद्यालय / पढ़े महाविद्यालय – बढ़े महाविद्यालय कार्यक्रम को 11:00 बजे दिन से 12:00 दिन तक आयोजित किए जाने हेतु वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय के पत्र संख्या– 11361 / सामा०प्रशा० / 2025 दिनांक– 03 मार्च 2025 के द्वारा माननीय कुलपति जी के आदेश के क्रम में निम्न नोडल अधिकारी नामित किए गए –

1. डॉ0 अनुराग मिश्र, असिस्टेंट प्रोफेसर, विधि विभाग, नोडल अधिकारी, विश्वविद्यालय परिसर।
2. डॉ0 राज बहादुर यादव, समन्वयक, राष्ट्रीय सेवा योजना, नोडल अधिकारी समस्त संबद्ध महाविद्यालय।

उक्त कार्यक्रम के सफल संचालन हेतु विश्वविद्यालय प्रशासन द्वारा छात्र संख्या की दृष्टि से समृद्ध महाविद्यालयों को चिन्हित कर वहां पर विश्वविद्यालय के वरिष्ठ आचार्य गण को प्रभारी नामित कर भेजा गया जिससे कि कार्यक्रम को सुगमता से संपन्न कराया जा सके।

राज भवन के निर्देश पर विश्वविद्यालय परिसर के विविध विभागों तथा संबद्ध महाविद्यालयों में सुंदर आकृतियां बनाकर छात्र / शिक्षक / कर्मचारी एवं समस्त स्टाफ ने 7 मार्च को प्रातः 11:00 दिन से 12:00 तक 1 घंटे अपने मनपसंद की पुस्तक पढ़ने का कार्यक्रम आयोजित हुआ। जिसमें विश्वविद्यालय स्तर पर 2778, महाविद्यालय स्तर पर 22838 तथा गोद लिये गये गाँव में 1399 व अन्य 37 लोगों सहित कुल 27,052 लोगों ने पुस्तक पढ़ी।



पढ़े विश्वविद्यालय - बढ़े विश्वविद्यालय / पढ़े महाविद्यालय - बढ़े महाविद्यालय

विद्या ददाति विनयं, विनयात् याति पात्रताम् ।
पात्रत्वात् धनमाप्नोति, धनात् धर्म ततः सुखम् ॥

अर्थ

ज्ञान विनम्रता प्रदान करता है, विनम्रता से योग्यता प्राप्त होती है, योग्यता से धन प्राप्त होता है, धन से धर्म और धर्म से सुख प्राप्त होता है।

कार्यक्रम का उद्देश्य –

शिक्षा किसी भी समाज की रीढ़ होती है, और इसका मुख्य उद्देश्य केवल किताबी ज्ञान देना नहीं, बल्कि छात्रों को ऐसे गुणों से संपन्न बनाना होता है जो उन्हें एक जिम्मेदार नागरिक के रूप में विकसित कर सकें। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए "पढ़े विश्वविद्यालय, बढ़े विश्वविद्यालय" अभियान की शुरुआत की गई है। यह अभियान विश्वविद्यालयों और कॉलेजों में छात्रों को पढ़ने के प्रति उत्साहित करने के साथ–साथ उनके व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास की दिशा में एक अहम कदम है।

पढ़ने की आदत को बढ़ावा देना –

आज की तेज़ रफ्तार और डिजिटल युग में छात्रों का ध्यान पढ़ाई से भटकना आम बात हो गई है। ऐसे समय में यह अभियान उन्हें पढ़ने की महत्ता से अवगत कराता है। नियमित पढ़ाई केवल परीक्षा की दृष्टि से ही नहीं, बल्कि ज्ञान और समझ की गहराई बढ़ाने के लिए भी जरूरी है। यह अभियान पुस्तकालयों में समय बिताने, शैक्षणिक गतिविधियों में भाग लेने और आत्म अध्ययन की आदत विकसित करने पर बल देता है।

ज्ञान में वृद्धि –

जब छात्र विभिन्न विषयों की पुस्तकें पढ़ते हैं, तो उनका ज्ञान एक सीमित दायरे से बाहर निकल कर विस्तृत हो जाता है। यह अभियान उन्हें साहित्य, विज्ञान, समाजशास्त्र, इतिहास, राजनीति जैसे विविध विषयों में रुचि लेने के लिए प्रेरित करता है। इससे वे न केवल अपने पाठ्यक्रम में सफल होते हैं, बल्कि जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में भी जानकारी पूर्ण निर्णय लेने में सक्षम बनते हैं।

सकारात्मक मूल्यों को बढ़ावा देना –

सिर्फ ज्ञान प्राप्त करना ही पर्याप्त नहीं, बल्कि उसे सही दिशा में उपयोग करना अधिक महत्वपूर्ण होता है। इस अभियान के माध्यम से छात्रों में नैतिक मूल्यों जैसे– ईमानदारी, सहिष्णुता, अनुशासन, सहानुभूति, और सामाजिक ज़िम्मेदारी को भी बढ़ावा दिया जाता है। पढ़ाई के दौरान वे उन महान व्यक्तित्वों के बारे में पढ़ते हैं जिन्होंने अपने जीवन मूल्यों से समाज को एक नई दिशा दी।

आत्मविश्वास और संचार कौशल का विकास –

पढ़ना केवल एक अकादमिक गतिविधि नहीं है, बल्कि यह आत्मविश्वास की नींव रखता है। जब छात्र अधिक पढ़ते हैं, तो उनकी शब्दावली समृद्ध होती है, विचार स्पष्ट होते हैं और वे सार्वजनिक मंचों पर अपने विचारों को निर्भीकता से प्रस्तुत करने में सक्षम हो जाते हैं। यह अभियान विद्यार्थियों को वाद–विवाद, निबंध लेखन, भाषण, और प्रस्तुतियों जैसी गतिविधियों में भाग लेने के लिए प्रेरित करता है।

महत्वपूर्ण सोच का विकास –

21वीं सदी में सफलता केवल रटे हुए ज्ञान से नहीं, बल्कि समस्याओं का विश्लेषण कर उन्हें सुलझाने की क्षमता से मिलती है। नियमित पढ़ाई छात्रों में आलोचनात्मक सोच विकसित करती है। वे किसी विषय को केवल सतही रूप से नहीं, बल्कि गहराई से समझने लगते हैं, जिससे उनमें निर्णय लेने की क्षमता और तार्किक सोच में सुधार होता है।

सामाजिक प्रगति में योगदान –

जब छात्र ज्ञान, नैतिकता और आत्मविश्वास से परिपूर्ण होते हैं, तो वे केवल अपने लिए ही नहीं, बल्कि समाज के लिए भी उपयोगी सिद्ध होते हैं। "पढ़े विश्वविद्यालय, बढ़े विश्वविद्यालय" अभियान समाज में जागरूक, समझदार और जिम्मेदार नागरिकों को तैयार करने की दिशा में कार्य करता है। ऐसे छात्र अपने आस–पास की समस्याओं को समझते हैं और उनके समाधान में भागीदारी निभाते हैं।

जौनपुर : शिक्षा, कला और संस्कृति का अद्भुत संगम



डॉ० सुनील कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर
जनसंचार और पत्रकारिता विभाग

उत्तर प्रदेश के सांस्कृतिक और ऐतिहासिक धरोहरों से समृद्ध जनपद जौनपुर न केवल स्थापत्य कला और साहित्य के क्षेत्र में अपनी विशिष्ट पहचान रखता है, बल्कि शिक्षा के क्षेत्र में भी इसकी भूमि अत्यंत उर्वर रही है। मुगलकालीन इतिहास की पर्तें जब खुलती हैं, तो उसमें जौनपुर का उल्लेख एक बौद्धिक केंद्र के रूप में होता है, जहां शिक्षा, कला और संस्कृति का अद्भुत संगम देखने को मिलता है।

क्यों कहा गया 'शिराजे हिन्द' ?

15 वीं शताब्दी में जब शर्की वंश ने जौनपुर को अपनी राजधानी बनाया, तब यहां शिक्षा के क्षेत्र में एक नवचेतना का संचार हुआ। शर्की सुल्तानों ने इस नगर को 'शिराजे हिन्द' अर्थात भारत का शिराज कहा, जो फारस के प्रमुख शिक्षायी नगर शिराज की तुलना में प्रयुक्त हुआ करता था। मदरसों की स्थापना, पांडुलिपियों का सृजन, फारसी और अरबी भाषा–साहित्य का उन्नयनकृये सब इस काल की प्रमुख विशेषताएं थीं। जौनपुर का अटाला मस्जिद और जामा मस्जिद न केवल स्थापत्य का अद्भुत उदाहरण हैं, बल्कि वे उस समय के शिक्षायी केंद्र भी थे, जहां धर्म, दर्शन और साहित्य पर विमर्श होते थे।

ब्रिटिश काल में रखी गई शिक्षा की आधुनिक बुनियाद : ब्रिटिश काल में जौनपुर की शिक्षा प्रणाली में संरचनात्मक परिवर्तन देखने को मिला। मिशनरी विद्यालयों के साथ–साथ सरकारी संस्थानों की स्थापना हुई। संस्कृत पाठशालाएं और मदरसे इस काल में भी सक्रिय रहे, लेकिन साथ ही अंग्रेजी शिक्षा की नई धारा भी प्रवाहित हुई, जिसने आधुनिक शिक्षापद्धति की नींव रखी। इस काल में जौनपुर से कई विद्वान निकल कर आए जिन्होंने देश की स्वतंत्रता संग्राम और पुनर्जागरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय का उदय : स्थापित वर्ष 1987 में, वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर ने न केवल पूर्वी उत्तर प्रदेश की शिक्षा की दशा–दिशा को नया आयाम दिया, बल्कि यह विश्वविद्यालय आज ज्ञान, शोध और नवाचार का एक प्रतिष्ठित केंद्र बन चुका है। इसका नाम उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री स्व. वीर बहादुर सिंह के नाम पर रखा गया, जिनकी दृष्टि में शिक्षा समाज परिवर्तन का मूल आधार थी। इस विश्वविद्यालय पूर्वांचल के कई जिले संबद्ध थे। मगर अन्य जिलों में भी विश्वविद्यालय खुलने के कारण अब वर्तमान में सिर्फ दो जिले ही संबद्ध है जौनपुर और गाजीपुर।



शिक्षा के क्षेत्र में उपलब्धियां : यह विश्वविद्यालय कला, विज्ञान, वाणिज्य, विधि, इंजीनियरिंग, प्रबंधन और फार्मेसी जैसे विविध अनुशासनों में शिक्षा प्रदान करता है। विश्वविद्यालय के अधीन सैकड़ों महाविद्यालय संचालित हैं, जो लाखों छात्रों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध कराते हैं। राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद (NAAC) से विश्वविद्यालय को प्रशंसनीय ग्रेड A+ प्राप्त हो चुका है, जो इसकी शैक्षिक गुणवत्ता का प्रमाण है।

खेलों में उत्कृष्टता : खेल के क्षेत्र में भी यह विश्वविद्यालय पीछे नहीं रहा। राष्ट्रीय स्तर की विभिन्न प्रतियोगिताओं में इसके छात्रों ने पदक अर्जित किए हैं। क्रिकेट, एथलेटिक्स, कबड्डी और बास्केटबॉल जैसे खेलों में विश्वविद्यालय की टीमों ने कई बार राज्य और राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में भाग लिया है। इसके अलावा परिसर में आधुनिक खेल परिसर, जिम्नेजियम और इंडोर स्टेडियम जैसी सुविधाएं भी विकसित की गई हैं। हास्टल में जिम की सुविधा उपलब्ध है।

संस्कृति और साहित्य का संवाहक : संस्कृति के क्षेत्र में विश्वविद्यालय द्वारा विभिन्न भाषाई, सांस्कृतिक एवं साहित्यिक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। वार्षिक सांस्कृतिक उत्सव 'पूर्वांचल महोत्सव' के माध्यम से स्थानीय लोककलाओं, नाट्य, संगीत और नृत्य रूपों को राष्ट्रीय मंच प्रदान किया जाता है। हिंदी और उर्दू साहित्य पर आधारित संगोष्ठियों से यह विश्वविद्यालय विचारधारात्मक विमर्श का केंद्र भी बना हुआ है।

सामाजिक सरोकारों की ओर दृष्टि : वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय शिक्षा को केवल डिग्री तक सीमित नहीं रखता, बल्कि समाजसेवा, पर्यावरण संरक्षण, महिला सशक्तिकरण, ग्राम विकास और स्वास्थ्य जागरूकता जैसे विषयों पर निरंतर कार्य करता है। राष्ट्रीय सेवा योजना (NSS) और राष्ट्रीय कैडेट कोर (NCC) के माध्यम से छात्रों को सामाजिक उत्तरदायित्व से जोड़ा जाता है। कोविड–19 के समय इस विश्वविद्यालय ने व्यापक स्तर पर जन– जागरूकता अभियान चलाया और समाज को सहयोग प्रदान किया।

शिक्षा की परंपरा का आधुनिक विस्तार : जौनपुर की ऐतिहासिक धरोहरों के साथ–साथ उसकी शैक्षिक चेतना का यह उत्कर्ष वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय के माध्यम से निरंतर आगे बढ़ रहा है। यह न केवल पूर्वांचल, बल्कि पूरे उत्तर भारत के लिए प्रेरणा का केंद्र बन चुका है। मुगलकालीन 'शिराजे हिन्द' की परंपरा आज भी जीवित है, आधुनिक परिधानों में, नई चुनौतियों के साथ और यह धारा तब तक प्रवाहित होती रहेगी, जब तक ज्ञान, संस्कार और समाज के प्रति उत्तरदायित्व हमारी शिक्षा व्यवस्था का मूल बने रहेंगे।

पढ़े विश्वविद्यालय - बढ़े विश्वविद्यालय के नायक



महेंद्र कुमार

कुलसचिव

महेंद्र कुमार जी के कार्यकाल में विश्वविद्यालय प्रशासन ने नवीन प्राण–पक्षियों की भांति स्वच्छ, व्यवस्थित एवं नवोन्मेषी गुणों से संभ्रांत स्वरूप ग्रहण किया। वे सदा ही दूरदर्शी नीति–निर्धारण एवं कर्मठ अनुशासन के परम पुजारी रहे हैं। उनके कुशल नेतृत्व में निम्नलिखित उपलब्धियाँ अंकित हुईं।

दूरस्थ प्रबंधन–प्रणाली का सृजन : डिजिटल दस्तावेज़ीकरण एवं ऑनलाईन फाइल ट्रैकिंग प्रणाली का कार्यान्वयन करके, महेंद्र जी ने कार्यालयीय प्रक्रिया को सशक्त एवं पारदर्शी बनाया। आदेशों की प्रगति समेत, हर चरण की सत्यापित जानकारी विभागाध्यक्षों तक तत्परता से संप्रेषित की जाती है, जिससे विलंब का प्रश्न ही उत्पन्न नहीं होता।

नियम–आज्ञा अनुपालन का सुव्यवस्थित अनुश्रवण : शासनादेशों व विश्वविद्यालय नियामावली के अनुपालन हेतु "अनुपालन निगरानी समिति" का गठन कराया, जो मासिक प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत करती है। प्रत्येक विभाग में "क्वालिटी गार्डियन" नियुक्त कराकर, आदेशों की शत–प्रतिशत पालना सुनिश्चित की जाती है।

कर्मचारियों के सामूहिक विकास एवं प्रशिक्षण : महेंद्र कुमार के समन्वय से समय–समय पर प्रशासनिक अधिकारियों व गैर–शिक्षण स्टाफ के लिए विषयगत कार्यशालाएँ एवं ई–लर्निंग सत्र आयोजित होते हैं। ऐसा संगठनात्मक वातावरण निर्मित हुआ, जहाँ सतत् ज्ञानवर्धन एवं नीति–आधारित कार्रवाई एक साझा संस्कृति की त्रिवेणी बनकर उमड़ती है।

नवीन प्रबंधन–संकल्पनाएँ : वित्तीय पारदर्शिता हेतु बजट लेखा–जोखा ऑनलाईन पोर्टल पर प्रदर्शित करना, जिससे संसाधन उपयोग की स्पष्टता बनी रहती है। विश्वविद्यालय की वृहद् नीतियों को कार्यान्वित करने में विभागाध्यक्षों को प्रत्यक्ष संलग्न रखकर सामूहिक सहयोग–संवाद की परंपरा स्थापित की।



प्रो० अजय द्विवेदी

छात्र अधिष्ठाता

वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय के प्रख्यात छात्र अधिष्ठाता प्रोफ़ेसर अजय द्विवेदी ने छात्रवृत्ति संबंधित समस्याओं के निराकरण में जो दृढ़ता और समर्पण प्रदर्शित किया, वह न केवल प्रशंसनीय है, वरन् प्रेरणास्रोत भी है। अपनी तीव्र बुद्धि, दूरदर्शिता एवं न्यायप्रिय दृष्टिकोण से प्रो. द्विवेदी ने विश्वविद्यालय में छात्रवृत्ति प्राप्ति के मार्ग में आने वाली अड़चनों को एक–एक कर निर्मूल कर दिया।

प्रोफेसर द्विवेदी ने सबसे पहले छात्रवृत्ति आवेदन प्रक्रिया को अत्यंत पारदर्शी एवं सुलभ बनाया। उन्होंने डिजिटल पोर्टल पर आवेदन–सूचीकरण का समन्वय सुनिश्चित कर, कागजी हस्तांतरण की उलझनों को समाप्त कर दिया। परिणामतः पिछड़े एवं वंचित वर्ग के कई विद्यार्थियों को समय से पूर्व छात्रवृत्ति राशि उपलब्ध हुई। उनके प्रयासों से आवेदन फॉर्म में त्रुटि–सूचक स्वचालित प्रणाली का प्रचालन आरंभ हुआ, जिससे आवेदकों को स्वतंत्र रूप से सुधार हेतु दिशा–निर्देश प्राप्त होते रहे।

प्रो. द्विवेदी ने वित्तीय अनियमितताओं की सतत् जारी पड़ताल करते हुए, छात्रवृत्ति कोष में पारदर्शिता सुनिश्चित की। उन्होंने उच्चाधिकारियों से संवाद स्थापित कर, कोष आवंटन में विलंब के कारणों का त्वरित निराकरण करवाया। नतीजतन, पिछली कालवशंषियों के रूके हुए छात्रवृत्ति अनुदान भी समयबद्धता से विद्यार्थियों के बैंक खातों में स्थानांतरित हुए।

इसके अतिरिक्त, छात्र हितों की रक्षा हेतु प्रो. द्विवेदी ने "वित्तीय सहायता हेल्पडेस्क" का शुभारंभ किया, जहाँ से प्रत्येक छात्र को व्यक्तिगत मार्गदर्शन एवं समस्या निवारण फीडबैक दिया जाता है। इस हेल्पडेस्क की वजह से असमंजस और भ्रम मिटे, तथा छात्रवृत्ति सम्बन्धी सभी प्रश्नों का तत्काल समाधान संभव हुआ।

अंततः, प्रोफ़ेसर अजय द्विवेदी का यह अटल उत्साह, न्यायप्रिय सेवा भाव और सक्रिय संकल्प, विश्वविद्यालय के छात्र समुदाय के लिए वरदान सिद्ध हुआ। उनके अनवरत प्रयासों ने न केवल छात्रवृत्ति प्रक्रिया को सरल एवं न्यायसंगत बनाया, अपितु अनेक विद्यार्थियों को शिक्षा के मार्ग पर दृढ़ता से अग्रसर होने का साहस भी प्रदान किया।

पूर्णेन्दु शुक्ल

वित्त अधिकारी



वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय के वित्त अधिकारी पूर्णेन्दु शुक्ला ने अपने कार्यकाल में वित्तीय प्रबंधन में पारदर्शिता और दक्षता को प्राथमिकता दी। उन्होंने बजट निर्माण की प्रक्रिया को डिजिटल किया, जिससे समय की बचत के साथ–साथ गलती की संभावना भी घटी। विश्वविद्यालय की आय और व्यय का लेखा–जोखा ऑनलाइन प्लेटफॉर्म पर उपलब्ध कराकर जवाबदेही को सुदृढ़ किया।

पूर्णेन्दु शुक्ला ने विभागों के लिए समयबद्ध बजट आवंटन सुनिश्चित किया, जिससे शैक्षणिक और प्रशासनिक कार्यों में गति आई। उन्होंने पेंशन, वेतन भुगतान, छात्रवृत्ति वितरण जैसी प्रक्रियाओं को सरल और डिजिटल माध्यमों से जोड़कर कर्मचारियों और छात्रों को समय पर लाभ दिलवाया। आंतरिक लेखा परीक्षण प्रणाली को सुदृढ़ करते हुए अनावश्यक व्ययों पर नियंत्रण स्थापित किया।

इसके अलावा, उन्होंने वित्त विभाग के कर्मचारियों को नई तकनीकों और वित्तीय सॉफ्टवेयर का प्रशिक्षण दिलवाया, जिससे कार्यकुशलता में वृद्धि हुई। पूणेन्दु शुक्ला की इन पहलों से विश्वविद्यालय की वित्तीय व्यवस्था अधिक पारदर्शी, उत्तरदायी और गतिशील बनी है, जिससे समग्र प्रशासनिक गति में उल्लेखनीय सुधार हुआ है।

प्रो० राज कुमार

प्राक्टर



प्राक्टर प्रोफेसर राजकुमार, वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय के शिक्षक, ने अपने समर्पित एवं द्रष्टव्य नेतृत्व से शैक्षिक एवं अनुशासनात्मक दोनों ही क्षेत्रों में अनूठी उपलब्धियाँ अर्जित की हैं। उनकी मुख्य उपलब्धियाँ निम्नलिखित बिंदुओं में संक्षेपित की जा सकती हैं।

1. **अनुशासनिक संस्कृति का सृजन :** प्रो. राजकुमार ने छात्रों में आत्म–अनुशासन और स्वशासी कार्यशैली को बढ़ावा दिया। उन्होंने नियमित तौर पर 'अनुशासन कार्यशालाएँ' आयोजित कर, समय प्रबंधन, कक्षा में शिष्टाचार तथा परियोजना कार्यों में समर्पण का महत्त्व समझाया। परिणामस्वरूप, परीक्षा हॉल में अनुचित व्यवहार में 80: तक कमी आई और असमय अनुपस्थिति दर 60: तक घट गई।
2. **समस्याओं का शांतिपूर्ण समाधान :** बार–बार तनावग्रस्त हो रहे छात्रों के साथ उन्होंने 'शांत चक्र' तकनीक अपनाई। इसमें वे विद्यार्थियों को पहले ध्यान से सुनते, फिर शांत धैर्य से उनके प्रश्नों एवं कठिनाइयों का विश्लेषण कर, सरल व व्यवहारिक समाधान सुझाते। इससे छात्र आत्मविश्वास से प्रेरित होकर अपनी शंकाओं का निर्भीकतापूर्वक सामना करने लगे।
3. **व्यक्तिगत मार्गदर्शन (मेंटरिंग) :** डॉ. राजकुमार ने प्रत्येक छात्र–छात्रा को व्यक्तिगत सलाह देने के लिए 'मेंटर क्लिनिक' की स्थापना की। यहाँ छात्रों को करियर विकल्प, रिसर्च प्रोजेक्ट्स, एवं आत्म–प्रेरणा संबंधित दिशा–निर्देश प्रदान किए जाते हैं। अब तक 200+ छात्रों ने इस क्लिनिक से लाभ उठाकर गहन शोध प्रकाशन और उच्च शिक्षा में प्रवेश हासिल किया है।
4. **समूह–संवाद कार्यक्रम :** उन्होंने 'समूह संवाद' सत्र नियमित रूप से आयोजित कर, विभिन्न विषयों पर मुक्त चर्चा एवं समस्या–निवारण सेशन करवाए। इस पद्धति ने छात्रों में सहकर्मी सहयोग और सामूहिक सोच को प्रोत्साहन दिया, जिससे समूह प्रोजेक्ट्स में सफलता का स्तर उल्लेखनीय रूप से बढ़ा।
5. **शैक्षणिक नवाचार :** डॉ. राजकुमार ने डिजिटल लर्निंग प्लेटफॉर्म, इंटरैक्टिव क्विज तथा केस–स्टडी पद्धति को पाठ्यक्रम में समाविष्ट किया। इन नवाचारों ने छात्रों की सीखने की प्रक्रियाओं को रोचक, व्यावहारिक और परिणामोन्मुखी बना दिया।

इन समग्र प्रयासों के कारण डॉ. राजकुमार ने विश्वविद्यालय परिसर में अनुशासन, आत्म–विश्वास और समस्या–समाधान की नवीन परंपराएँ स्थापित की हैं। उनके शांत, परन्तु प्रखर नेतृत्व ने विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास सुनिश्चित करते हुए उन्हें चुनौतियों के सफल निपटान के लिए सशक्त बनाया है।

डॉ० विनोद कुमार सिंह

परीक्षा नियंत्रक



वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय के परीक्षा नियंत्रक, डॉ0 विनोद कुमार सिंह – एक उत्कट अतुलनीय प्रतिबद्धता के प्रतीक हैं। उनके नेतृत्व में विश्वविद्यालय में परीक्षा प्रणाली ने एक नूतन प्रस्थान किया, जहाँ समयः परिणाम घोषणाएँ और अचूक परीक्षा संचालन दोनो ही अपनी चरम सीमा पर पहुँचे। डॉक्टर सिंह की दूरदर्शिता और अटूट समर्पण से पूर्वांचल विश्वविद्यालय ने शिक्षा की अनवरत यात्रा में एक सोपान और ऊँचाई प्राप्त की।

डॉ. सिंह ने पदभार ग्रहण करते ही प्रथम लक्ष्य निर्धारित किया : "परीक्षा–परिणाम की गति को तीव्र, परंतु गुणवत्ता से कभी समझौता न करें।" अतः उन्होंने तकनीकी नवाचारों को अंगीकार कर, पुराने कागज़ी सिस्टम को अधिकांशतः डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म पर स्थानांतरित किया। ई–पूर्वा परीक्षा पोर्टल के माध्यम से परीक्षार्थियों को प्रवेश–पत्र, डेटशीट और अन्य महत्वपूर्ण सूचना त्वरित गति से उपलब्ध कराने की व्यवस्था की। इस ऑनलाईन प्रणाली की सरलता और सुदृढ़ता ने तदर्थ त्रुटि–भाव को न्यूनतम कर, परिणामों के प्रकाशन को निर्दिष्ट समय–सारिणी से पूर्व ही साकार किया।

परीक्षा के दौरान अनुशासन और पारदर्शिता के उच्चतम मानदंड स्थापित करने के लिए डॉ. सिंह ने कड़ी निगरानी, विकेंद्रीकृत मूल्यांकन और बहुस्तरीय सत्यापन प्रक्रिया शुरू की। प्रत्येक उत्तर–पत्र का मूल्यांकन कम्प्यूटरीकृत प्रक्रिया द्वारा सुनिश्चित हुआ, जिससे मानवीय पक्षपात और विलंब की संभावनाएँ बिल्कुल समाप्त हो गईं। इसके फलस्वरूप, विश्वविद्यालय के छात्र–छात्राओं में आनेवाले परिणामों के प्रति विश्वास दृढ़ हुआ तथा शैक्षणिक प्रतिष्ठा में अभूतपूर्व वृद्धि हुई।

इसके अतिरिक्त, डॉ. विनोद कुमार सिंह ने हर परीक्षा–चक्र के पश्चात् "परीक्षा–गुणवत्ता समिति" का गठन किया, जो परीक्षा आयोजन में आए किसी भी व्यवधान या सुधारात्मक आवश्यकता का सुक्ष्म विश्लेषण कर, आगामी सत्रों में उसी अनुरूप सुधार निर्देशित करती है। इस नवोन्मेषी पहल से विश्वविद्यालय की परीक्षा–प्रणाली निरंतर द्रुतगामी सुधारों का मार्गदर्शन पाती रही।

उनके प्रयासों की परिणति स्वरूप, हालिया स्नातक परिणाम विश्वविद्यालय के इतिहास में सबसे शीघ्र समय–सिर्फ़ पच्चीस दिन में–सभी घोषणा कर देने का गौरव अर्जित कर चुका है।

डॉ0 सिंह की प्रशासनिक कुशलता, दृढ़ संकल्प तथा तकनीकी अनुकूलन की दृष्टि ने वी.बी.एस. पूर्वांचल विश्वविद्यालय को शैक्षणिक उत्कृष्टता के नए आयाम प्रदान किए।

प्रो० सौरभ पाल

चीफ वार्डेन



चीफ वार्डन प्रोफेसर सौरभ पाल, वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर में अपने शांत, सौम्य और मिलनसार व्यवहार के लिए विख्यात हैं। वे हमेशा विद्यार्थियों के साथ सहज भाषा में बातचीत करते हैं, जिससे छात्र आत्मविश्वास से अपनी समस्याएँ साझा कर पाते हैं। उनके अंतर्मुखी नहीं बल्कि सहयोगी स्वभाव ने हॉस्टल परिसर में एक परिवार जैसा माहौल बना दिया है।

प्रोफेसर पाल ने विश्वविद्यालय में हॉस्टल व्यवस्था को आधुनिक बनाने की दिशा में कई पहल की हैं। उन्होंने वाशिंग मशीन, शुद्ध पेयजल यंत्र एवं बेहतर लाईटिंग व्यवस्था जैसी सुविधाएँ उपलब्ध कराईं, जिससे छात्रों का दैनिक जीवन सुगम हुआ। साथ ही, उन्होंने हॉस्टल में नियमित साफ–सफाई और पौधारोपण अभियान भी चलाए, जिससे परिसर स्वच्छ और हरित बना रहा।

शैक्षणिक दृष्टि से भी वे सक्रिय रहे हैं। वे विद्यार्थियों को समय–समय पर अध्ययन सामग्री एवं मार्गदर्शन प्रदान करते हैं। हर नए सत्र की शुरुआत में वे "ओरिएंटेशन सेशन" आयोजित करते हैं, जिसमें हॉस्टल नियम, समय प्रबंधन और स्वास्थ्य– स्वच्छता के विशेष टिप्स देते हैं। इससे प्रथम वर्ष के छात्र भी जल्दी अनुकूल हो जाते हैं। सामाजिक और सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भी उनका योगदान उल्लेखनीय है। वे हॉस्टल मे सप्ताहांत गतिविधियाँ आयोजित कराते हैं– जैसे कवि गोष्ठियाँ, सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ और खेल प्रतियोगिताएँ–जिससे छात्रों में सहृदयता और टीम भावना विकसित होती है।

प्रोफेसर पाल का सबसे बड़ा गुण उनकी सुनने की क्षमता है। वे न केवल पढ़ाई से जुड़ी समस्याएँ, बल्कि छात्राओं/छात्रों की व्यक्तिगत परेशानियाँ भी ध्यान से सुनते हैं और यथासंभव मदद करते हैं। उनका यह व्यवहार छात्रों को तनावमुक्त रखता है।

विश्वविद्यालय / महाविद्यालय परिसरों में आयोजित कार्यक्रम के फोटोग्राफ्स



विश्वविद्यालय परिसर के प्रबन्ध अध्ययन संकाय में पुस्तक पढ़ते विद्यार्थी



रामनाथ महाविद्यालय, जौनपुर में पुस्तक पढ़ती छात्राएँ



फार्मेसी संस्थान, विश्वविद्यालय परिसर में पुस्तक पढ़ते शिक्षक एवं विद्यार्थी



इंजीनियरिंग संस्थान, विश्वविद्यालय परिसर में पुस्तक पढ़ते छात्रगण



विश्वविद्यालय परिसर के कुलपति सभागार में पुस्तक पढ़ती मा० कुलपति, परीक्षा नियंत्रक, आचार्यगण एवं कर्मचारी



गाजीपुर के स्नातकोत्तर महाविद्यालय में पुस्तक पढ़ते शिक्षक एवं विद्यार्थी



जंगी महाविद्यालय, अस्बरनपुर, जौनपुर में पुस्तक पढ़ते शिक्षक एवं विद्यार्थी



बाल्थर डिग्री कालेज, जौनपुर में पुस्तक पढ़ती छात्राएँ



प्रबन्ध अध्ययन संस्थान, विश्वविद्यालय परिसर में पुस्तक पढ़ते छात्रगण



मड़ियाहूँ पी.जी. कालेज, जौनपुर में पुस्तक पढ़ते छात्र/छात्राएँ



विश्वविद्यालय परिसर स्थित दत्तोपंथ ठेंगड़ी विधि संस्थान में पुस्तक वाचन करते शिक्षक एवं विद्यार्थी



गाजीपुर के मुस्तफाबाद महाविद्यालय में पुस्तक वाचन करते शिक्षक एवं विद्यार्थी



जौनपुर के राष्ट्रीय पी.जी. कालेज, जमुहाई में पुस्तक वाचन करते शिक्षक एवं विद्यार्थी

विभिन्न दैनिक समाचार पत्रों में प्रकाशित समाचार

इन्टरनेट के दौर में भी किताबों का अलग महत्वः कुलपति



ब्यूरो आज का परिणाम/ जौनपुर। पूर्वांचल विश्वविद्यालय परिसर एवं सम्बद्ध महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालय द्वारा गोद लिए गाँव मे शुक्रवार को 'पढ़े विश्वविद्यालय,बढ़े विश्वविद्यालय एवं पढ़े महाविद्यालय, बढ़े महाविद्यालय' कार्यक्रम का आयोजन हुआ। विश्वविद्यालय के मुक्तांगन में दहेज मुक्त एवं नशा मुक्त भारत के लिए कुलपति प्रो. वंदना सिंह ने विश्वविद्यालय के शिक्षकों,अधिकारियों,कर्मचारियों एवं विद्यार्थियों को प्रतिज्ञा दिलाई। कुलपति ने कहा कि किताबें न केवल शिक्षा का एक स्रोत है बल्कि हमारे मानसिक विकास, सोचने की क्षमता और व्यक्तित्व निर्माण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। उन्होंने कहा कि इन्टरनेट के इस दौर में भी किताबों का अपना एक अलग महत्व है किताबों से हमें ज्ञान मिलता है और नए विचार और दृष्टिकोण से परिचित भी होते है. किताबों को अपने जीवन से जोड़े रखें। विश्वविद्यालय के विज्ञान, अनुप्रयुक्त सामाजिक विज्ञान संकाय, प्रबंध अध्ययन संकाय, फार्मेसी, विधि संकाय और इंजिनीयरिंग संकाय के विभागों में दिन मे 11बजे से 12 बजे तक शिक्षकों और विद्यार्थियों ने किताब पढ़ी. विश्वविद्यालय के प्रशासनिक भवन के भी विभिन्न विभागों मे कर्मचारियों ने किताब पढ़ी। संयोजक डॉ जान्हवी श्रीवास्तव ने बताया कि इस बार विद्यार्थियों को आकृतियों मे भी बैठा कर किताबे पढ़ाई गई. प्रबंध अध्ययन संकाय में संकाय के नाम की आकृति, संकाय भवन मे डीएनए, रज्जू भईया संस्थान में पुस्तक, मुक्तांगन में भारत माता एवं फार्मेसी संस्था में ओम लिखी आकृति में भी विद्यार्थियों को किताब पढ़ने के लिए बैठाया गया था विभिन्न गतिविधियों का संयोजन डॉ. अनुराग मिश्र एवं डॉ. शशिकांत ने किया। कुलसचिव महेंद्र कुमार, परीक्षा नियंत्रक डॉ. विनोद कुमार सिंह, प्रो अजय द्विवेदी, प्रो राम नारायण, प्रो राजेश सिंह, प्रो वीडी शर्मा, डॉ माया सिंह, डॉ आशुतोष सिंह, व शिक्षक, कर्मचारी और विद्यार्थी शामिल रहे।

पुस्तक पढ़ना ज्ञान, संवेदना और दृष्टिकोण को विस्तृत करता है।
– डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

प्रयागराज, आजमगढ़, जौनपुर, बांदा **अवधनामा**

ताबों को अपने जीवन से जोड़े रखेः प्रो. वंदना सिंह

विश्वविद्यालय, बढ़े विश्वविद्यालय एवं पढ़े महाविद्यालय, बढ़े महाविद्यालय कार्यक्रम का हुआ आयोजन



जौनपुर

किताबों को अपने जीवन से जोड़े रखेः प्रो. वंदना



जौनपुर जागरण www.jagran.com

किताबों को अपने जीवन से जोड़े रखें : कुलपति

पढ़े विश्वविद्यालय, बढ़े विश्वविद्यालय कार्यक्रम का आयोजन, दहेज व नशा मुक्त भारत के लिए दिलाई प्रतिज्ञा



विभिन्न दैनिक समाचार पत्रों में प्रकाशित समाचार

इन्टरनेट के दौर में भी किताबों का अलग महत्वः कुलपति

निष्पक्ष प्रतिदिन। जौनपुर



पूर्वांचल विश्वविद्यालय परिसर एवं सम्बद्ध महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालय द्वारा गोद लिए गाँव में शुक्रवार को "पढ़े विश्वविद्यालय,बढ़े विश्वविद्यालय एवं पढ़े महाविद्यालय, बढ़े महाविद्यालय" कार्यक्रम का आयोजन हुआ।

विश्वविद्यालय के मुक्तांगन में दहेज मुक्त एवं नशा मुक्त भारत के लिए कुलपति प्रो. वंदना सिंह ने विश्वविद्यालय के शिक्षकों, अधिकारियों, कर्मचारियों एवं विद्यार्थियों को प्रतिज्ञा दिलाई। कुलपति ने कहा कि किताबें न केवल शिक्षा का एक स्रोत हैं, बल्कि हमारे मानसिक विकास, सोचने की क्षमता और व्यक्तित्व निर्माण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं. उन्होंने कहा कि इन्टरनेट के इस दौर में भी किताबों का अपना एक अलग महत्व है. किताबों से हमें ज्ञान मिलता है और नए विचार और दृष्टिकोण से परिचित भी होते है। किताबों को अपने जीवन से जोड़े रखे। विश्वविद्यालय के विज्ञान, अनुप्रयुक्त सामाजिक विज्ञान संकाय, प्रबंध अध्ययन संकाय, फार्मेसी, विधि संकाय और इंजिनीयरिंग संकाय के विभागों में दिन में 11 बजे से 12 बजे तक शिक्षकों और विद्यार्थियों ने किताब पढ़ी. विश्वविद्यालय के प्रशासनिक भवन के भी विभिन्न विभागों में कर्मचारियों ने किताब पढ़ी। संयोजक डॉ जान्हवी श्रीवास्तव ने बताया कि इस बार विद्यार्थियों को आकृतियों में भी बैठा कर किताबें पढ़ाई गई. प्रबंध अध्ययन संकाय में संकाय के नाम की आकृति, संकाय भवन में डीएनए, रज्जू भईया संस्थान में पुस्तक, मुक्तांगन में भारत माता एवं फार्मेसी संस्था में ओम लिखी आकृति में भी विद्यार्थियों को किताब पढ़ने के लिए बैठाया गया था. विभिन्न गतिविधियों का संयोजन डॉ. अनुराग मिश्र एवं डॉ. शशिकांत ने किया। कुलसचिव महेंद्र कुमार, परीक्षा नियंत्रक डॉ. विनोद कुमार सिंह, प्रो. अजय द्विवेदी, प्रो राम नारायण, प्रो. राजेश सिंह, डॉ. आशुतोष सिंह, व शिक्षक, कर्मचारी और विद्यार्थी शामिल रहे।

किताबों को अपने जीवनसे जोड़े रखें-प्रो. वंदना

पूर्वांचल विश्वविद्यालय, पूर्वांचल विश्वविद्यालय एवं पूर्वं महाविद्यालय, पूर्वं महाविद्यालय कार्यक्रम का हुआ आयोजन

दहेज मुक्त एवं नशा मुक्त भारत के लिए दिलवाई गई प्रतिज्ञा



जौनपुरटाइम्स। कुलाधिपति एवं राष्ट्रीय उच्च प्रबंध अवसंरचना परिषद के निदेश के क्रम में प्रो० वंदना सिंह कुलपति पूर्वांचल विश्वविद्यालय परिसर एवं सम्बद्ध महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालय द्वारा गोद लिए गाँव में शुक्रवार को पूर्वं विश्वविद्यालय, बढ़े विश्वविद्यालय एवं पढ़े महाविद्यालय, बढ़े महाविद्यालय कार्यक्रम का आयोजन हुआ। इसके साथ ही विश्वविद्यालय के मुक्तांगन में दहेज मुक्त एवं नशा मुक्त भारत के लिए कुलपति प्रो. वंदना सिंह ने विश्वविद्यालय के शिक्षकों, अधिकारियों, कर्मचारियों एवं विद्यार्थियों को प्रतिज्ञा दिलाई।

कुलपति प्रो. वंदना सिंह ने कहा कि किताबें न केवल शिक्षा का एक स्रोत हैं, बल्कि हमारे मानसिक विकास, सोचने की क्षमता और व्यक्तित्व निर्माण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। उन्होंने कहा कि इन्टरनेट के इस दौर में भी किताबों का अपना एक अलग महत्व है। किताबों से हमें ज्ञान मिलता है और नए विचार और दृष्टिकोण से परिचित भी होते है, किताबों को अपने जीवन से जोड़े रखें। कुलपति प्रो. वंदना सिंह ने कुलपति सभागार में अधिकारियों और कर्मचारियों के साथ समय बिताना पड़ी। इसी क्रम में विश्वविद्यालय के विज्ञान, अनुप्रयुक्त सामाजिक विज्ञान संकाय, प्रबंध अध्ययन संकाय, फार्मेसी, विधि संकाय और इंजिनीयरिंग संकाय के विभागों में दिन में 11 बजे से 12 बजे तक शिक्षकों और विद्यार्थियों ने किताब पढ़ी। विश्वविद्यालय के प्रशासनिक भवन के भी विभिन्न विभागों में कर्मचारियों ने किताब पढ़ी। कार्यक्रम को संयोजक डॉ. जान्हवी श्रीवास्तव ने बताया कि इस बार विद्यार्थियों को आकृतियों में भी बैठा कर किताबें पढ़ाई गई। प्रबंध अध्ययन संकाय में संकाय के नाम की आकृति, संकाय भवन में डीएनए, रज्जू भईया संस्थान में पुस्तक, मुक्तांगन में भारत माता एवं फार्मेसी संस्था में ओम लिखी आकृति में भी विद्यार्थियों को किताब पढ़ने के लिए बैठाया गया था. विभिन्न गतिविधियों का संयोजन डॉ. अनुराग मिश्र एवं डॉ. शशिकांत ने किया। विश्वविद्यालय में आयोजित कार्यक्रम की विभिन्न गतिविधियों में कुलसचिव महेंद्र कुमार, परीक्षा नियंत्रक डॉ. विनोद कुमार सिंह, प्रो. अजय द्विवेदी, प्रो. राम नारायण, प्रो. राजेश सिंह, डॉ. आशुतोष सिंह, डॉ. आलोक पुरी, डॉ. अविनाश, डॉ. विनिता सिंह ठाकुर, डॉ. चन्दन सिंह, मनोज पाण्डेय, डॉ. शिव जायसवाल, डॉ. प्रमेन्द्र विक्रम सिंह, डॉ. प्रियंका सिंह मनोज शिवम, कर्मचारी और विद्यार्थी शामिल रहे। विश्वविद्यालय ने कार्यक्रम को सफलतापूर्वक संपन्न कराने के लिए पर्यवेक्षकों को भी नियुक्त किया था। इसमें प्रो. रामजी पाण्डेय, प्रो. मनोज सिंह, प्रो. अशोक कुमार श्रीवास्तव, प्रो. अविनाश चन्द्रौकर, प्रो. अजय प्रताप सिंह, प्रो. राजेश सिंह, प्रो. रवि प्रकाश, डा कुलानन्द मौर्य सिंह, अमृत लाल को जिम्मेदारी दी गई थी। राजेपुर पीजी कॉलेज के प्राचार्य प्रो.राजेन्द्र कुमार पाण्डेय को राजेपुर का समन्वयक बनाया गया था।

"एक अच्छा पुस्तकालय राष्ट्र की आत्मा का निर्माण करता है।"
– महात्मा गाँधी

"पुस्तक पढ़ना केवल मनोरंजन नहीं, आत्मा का भोजन है।"
– मुंशी प्रेमचंद

कुलगीत

वीर बहादुर सिंह विश्वविद्यालय का हरितांचल।
जय-जय-जय "पूरब की आत्मा," जय-जय-जय "पूर्वाञ्चल"।।
पूर्व दिशा का ताज रहा है,
"भारत का शीराज रहा है,
यह यमदग्नि-यजन की बेदी यह "कुतबन" का मादल।
जय-जय-जय "पूरब की आत्मा," जय-जय-जय "पूर्वाञ्चल"।।
दो धर्मों की मिलन-धुरी यह,
राग सलोना "जौनपुरी" यह,
संघर्षों की झंझर में झंकृत जिसके जीवन-पल।
जय-जय-जय "पूरब की आत्मा," जय-जय-जय "पूर्वाञ्चल"।।
नये सृजन की सजी आरती,
उतरी वीणा लिये भारती,
नव-जागरण-थाल में अर्पित यह पावन तुलसी-दल।
जय-जय-जय "पूरब की आत्मा," जय-जय-जय "पूर्वाञ्चल"।।
कला-शिल्प-विज्ञान कलेवर,
छलकाये प्रकाश के निर्झर,
धेनुमती-तमसा-गंगा का यह पावन क्रीड़ास्थल।
जय-जय-जय "पूरब की आत्मा," जय-जय-जय "पूर्वाञ्चल"।।
नीति हमारी सरल-तरल हो,
जिसमें जन का क्षेम-कुशल हो,
गौतम-कपिल-कणाद-पंतजलि हो आदर्श अचंचल।
जय-जय-जय "पूरब की आत्मा," जय-जय-जय "पूर्वाञ्चल"।।

